Introduction

:: प्राक्कथन ::

पंजाब और गुजरात में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अति प्राचीनकाल से ही एक विशेष आकर्षण रहा है। इन प्रदेशों के साहित्यकारों ने अपनी मातृभाषाओं - पंजाबी और गुजराती के अलावा हिन्दी में भी अनवरत रूप से साहित्य- सर्जना की है। इन प्रदेशों के जन-मानस में आज भी हिन्दी के प्रति एक विशेष अभिरुचि एवं लगाव की भावना दिखाई देती है। लोकमानस में अंकुरित, सिंचित एवं पल्लवित इन्हीं संस्कारों के कारण मेरी रूचि भी प्रारंभ से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष रही है। मुख्य विषय हिन्दी लेकर एम० ए० में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद मेरे मन में शोधकार्य करने की लालसा उत्पन्न हुई। क्रमशः मन की लालसा ने इच्छा का सुदृढ़ स्वरूप धारण किया और मन में संकल्प किया कि मैं शोधकार्य करूँ। अब विषय की समस्या मेरे सम्मुख उपस्थित हुई। प्रारम्भ से ही कनक किरण के अंतराल में लुकछिप कर चलने वाले लाज भरे सौन्दर्य के सृष्टा प्रसाद के काव्य के प्रति मेरे मन में एक अजीब सा आकर्षण और लगाव रहा है। आजकल हिन्दी के क्षेत्र में सौन्दर्यशास्त्रीय और शैली वैज्ञानिक दृष्टियों से अनेक साहित्यकारों का विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। अतएव, मेरे सौन्दर्य विमुग्ध मन ने प्रसाद काव्य का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करने का संकल्प किया। आज जब मैं अपने इस संकल्प की एक सार्थक परिणति के रूप में शोधकार्य को देखती हूँ तो सहसा रोमांचित हो जाती हूँ तथा अति सन्तोष और प्रसन्नता का भी अनुभव करती हूँ।

काव्यशास्त्रीय अध्ययन में हम रस शब्द शक्ति वृत्ति आदि की दृष्टि से काव्य की आलोचना करते हैं। लेकिन सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन में सौन्दर्यानुभूति,

कल्पना, बिंब, प्रतीक, मिथक प्रयोग आदि की दृष्टि से काव्य की परीक्षा होती है। काव्य के सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन से उसका पूर्ण विवेचन सम्भव है क्योंकि भाव और कल्पना के सौन्दर्य के साथ-साथ इनके सम्प्रेषण के उपादानों भाषा, अप्रस्तुत बिंब, प्रतीक एवं लय आदि का विवेचन भी इसकी सीमा में आता है। इसके अतिरिक्त मानवीय एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की व्यापकता और गहनता की गवेषणा भी सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से की जा सकती है।

श्री जयशंकर प्रसाद निश्चित ही इस शताब्दी के अप्रतिम कवि हैं। उनके काव्य में मानव- जीवन के विकास की स्वाभाविक ~~पगडंडी~~ पगडंडियाँ विद्यमान हैं। यह 'प्रेमपथिक' पहले 'कानन-कुसुम' में अपना 'चित्राधार' खोजता रहा है। कभी वह 'करूणालय' की शरण गया तो कभी 'महाराणा के महत्व' का गुणगान करने लगा। कभी उसकी भावानुभूतियां 'झरना' सी झरी है तो कभी 'आँसू' - सी बरसी हैं और 'लहर'- सी लहरी हैं। सबमें विचित्र विरोधाभास और अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। 'चित्राधार' से 'कामायनी' तक की उनकी क्रमशः ऊर्ध्वमुखी यात्रा इस बात का प्रमाण है कि उनके काव्य पथ में अनेक पड़ाव आये पर पैरों की गति कहीं मन्द नहीं हुई। वे निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहे।

प्रसाद जी के सम्पूर्ण साहित्य में सौंदर्य की धारा अविच्छिन्न-रूप से प्रवहमान है। वही उनके साहित्य का मेरूदण्ड है। सौंदर्य की जो रसवंती-धारा उनकी चेतना के उतुंग एवं उज्ज्वल श्रृंग से प्रस्फुटित हुई वह उनके काव्योपवन की विभिन्न क्यारियों को सींच रही है। उनके काव्य- तरू के फूलों और फलों में यही मधुरस छलक रहा है। उनके काव्य साहित्य का विशाल, कलापूर्ण एवं भव्य- भवन सौंदर्य की आधार शिला पर ही खड़ा हुआ है। इस भव्य-भवन

के अन्दर यदि हीरे, मोती और नीलम की चमक-दमक है तो इसके बाहर सुधा के सरोवर भी तरंगायित हैं जिनमें स्वर्ण- कमल खिल रहे हैं। जिसके चारों ओर मालती और मल्लिका की कुंजें सुशोभित हैं। इन कुंजों में रंग- बिरंगे पक्षी बंशी बजा रहे हैं और पराग की चहल- पहल हो रही है। इन्हीं कुंजों में उषा और प्रभात की लुकाछिपी, संध्या और दिवस की क्रीडायें चल रही हैं। प्रसाद जी के इस सौंदर्य भवन में नीलम की प्यालियों में मणिका- मदिरा ढलती रहती है साथ ही स्वर्ण- पात्रों में आनन्द सुधा भी बहती रहती है। `चित्राधार` से प्रारंभ हुई उनकी यह यात्रा `कामायनी` में जाकर पूर्ण होती है। उनकी सौंदर्य चेतना से मानवीय और प्राकृतिक सौंदर्य की जो धाराएँ निःसृत हुई, वे आनंदोदधि में मिलने के लिए कामुलता और अधीरता से दौड़ती हुई दिखाई पड़ती हैं। इन धाराओं में जो तरंगें दिखाई पड़ती हैं वे सब आनन्द-सागर में पहुँचकर निस्तरंग हो जाती हैं। प्रसाद की सौंदर्य-चेतना का यही सबसे बड़ा रहस्य है।

मानव और प्रकृति के भिन्न- भिन्न रूपों में उन्होंने जिस सौन्दर्य के दर्शन किए वह परमसत्ता के अखंड और निस्सीम सौन्दर्य की झलक मात्र है। उन्हें प्रत्येक सुन्दर कृति के पीछे अखण्ड सौंदर्य का अक्षय कोश छिपा हुआ दिखाई पड़ता है, जिसे देखकर वे विस्मय और कुतूहल के भावों में डूबने उतराने लगते हैं। जब कवि के परदे में छिपा हुआ छाया- नट उनको अपनी सम्मोहक वेणु द्वारा आकर्षित करता है तब उन्हें अनुभव होता है कि संसार का समस्त बाह्य सौन्दर्य क्षणभंगुर है। बाह्य और नश्वर सौंदर्य के अन्दर `विश्वात्मा` का जो शाश्वत सौन्दर्य है उसी की खोज में उनकी चेतना तल्लीन रहती है। विश्व में जो कुछ भी बिखरा हुआ सौंदर्य दिखाई पड़ता है वह सौंदर्य- सागर विश्वात्मा

का अंशमात्र है । इसी सौंदर्य- सुधा-सागर में पहुँचकर परमानन्द का अनुभव होता है क्योंकि जो 'विश्वात्मा' सौन्दर्य का कोश है वही आनन्द का भण्डार भी है । इस अनंत सौंदर्य के दर्शन प्राप्त हो जाने पर जड़ और चेतन का भेद समाप्त हो जाता है । यहाँ एकमात्र चेतना का ही वैभव फैला हुआ दिखाई देता है । प्रसाद जी ने सौन्दर्य के दर्शन इसी रूप में किए हैं । इसी रूप में सौन्दर्य उनके लिए सत्य बन गया था । उन्होंने उसे चेतना को उज्ज्वल वरदान के रूप में अभिहित किया तथा आदर्श रूप में प्रस्तुत किया था । उनकी भाषा की सरसता और कमनीयता उनकी उदात्त सौंदर्य चेतना की परिचायिका है । प्रसाद जी अंग्रेजी कवि कीट्स की भाँति एक जागरूक कलाकार थे । इसीलिए वे उत्कृष्ट कलात्मक सौंदर्य की सृष्टि कर सके । उनकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा ने नये- नये प्रतीकों, बिंबों और उपमानों की सृष्टि कर अभिनव कलात्मक सौंदर्य की झाँकी प्रस्तुत की । उनके अधिकांश प्रतीक, बिंब और उपमान ऐसे हैं जिन पर घरती की धूल नहीं लगी है । यही कारण है कि उनके प्रतीकों, बिंबों और उपमानों का व्यवहार आज भी हो रहा है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद जी ने एक अभिनव सौंदर्य-लोक का निर्माण किया । सौंदर्य का कोई भी क्षेत्र अथवा कोना उनके स्पर्श से अछूता न रहा । यही कारण है कि उनके सौंदर्य चित्रण का बाद के कवियों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा है । पार्थिव सान्दर्य के जिन विभिन्न रूपों को उन्होंने प्रस्तुत किया वे सब अनन्त सौन्दर्य की यात्रा में पड़ने वाले पड़ाव मात्र हैं । सौंदर्य के उत्स तक यात्रा करने वाली उनकी चेतना जिन सरणियों पर चलती है वही सरणियाँ भिन्न- भिन्न सौंदर्य रूपों में दिखाई पड़ती हैं । उनकी चेतना की भिन्न-भिन्न तरंगों में एक ही अन्तर्धारा प्रवाहित है - सौन्दर्य की धारा । प्रसाद के समस्त साहित्य का जीवन तत्व सौन्दर्य ही है । प्रसाद के लिए सौंदर्य ही

कर्म था , सौन्दर्य ही धर्म था । उनके काव्य और जीवन का उद्देश्य सौंदर्य ही था । उनकी चेतना सर्वत्र सौंदर्य का ही संचय करती थी और उनके सुकवि को उसी का दान कर देती थी - 'प्रतिभा डाली भर लाता कर देता दान सुकवि को।' वस्तुत: प्रसाद संसार के महान सौंदर्यवादियों में से एक थे ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध नौ विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है । प्रथम एवं द्वितीय अध्यायों में सौंदर्यशास्त्र की सैद्धांतिक विवेचना प्रस्तुत की गई है ।

प्रथम अध्याय के प्रारम्भ में सौंदर्यशास्त्र का अर्थ व्यापकता से स्पष्ट करते हुए उसके क्षेत्र-विस्तार की विवेचना की गई है । सौंदर्यशास्त्र की विभिन्न - परिभाषाओं की चर्चा करते हुए काव्यशास्त्र तथा सौंदर्यशास्त्र के अन्तर को स्पष्ट किया गया है । तदनंतर भारतीय काव्यशास्त्र तथा पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र के विकासक्रम की संक्षिप्त सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गई है । अन्त में रसानुभूति और सौंदर्यानुभूति को स्पष्ट करते हुए उनके वैषम्य को प्रकाशित किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में सौंदर्यशास्त्र के प्रमुख तत्वों- सौंदर्य, बिंब, प्रतीक, कल्पना और मिथक का सैद्धांतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । इनमें से प्रत्येक तत्व का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । तत्पश्चात् भारतीय एवं पश्चिमी विद्वानों की विभिन्न महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख करते हुए कल्पना और फैंसी, बिंब और रूपक, बिंब और मिथक, प्रतीक और रूपक प्रतीक और मिथक, प्रतीक और संकेत, प्रतीक और बिंब, मिथक और निजंधरी कथा, मिथक और धर्मगाथा, मिथक और लोककथा के आपसी अन्तर को स्पष्ट किया गया है । अन्त में भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों द्वारा

प्रस्तुत किये गये विभिन्न वर्गीकरणों की चर्चा की गई है ।

तृतीय अध्याय में युग प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद के जीवन व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षेप में निरूपण किया गया है । 'चित्राधार' से लेकर महाकाव्य 'कामायनी' तक की कवि की विशाल काव्य यात्रा का एक आलेख प्रस्तुत करते हुए उसकी विशेषताओं को उद्घाटित किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय प्रसाद काव्य में सौन्दर्य विधान को लेकर लिखा गया है । इसमें प्रसाद जी को एक सौंदर्यवादी कवि के रूप में अंकित किया गया है । प्रसाद जी की सौन्दर्य सम्बंधी अवधारणा की चर्चा करते हुए उनके काव्य में निरूपित सौंदर्य के विविध पक्षों का उल्लेख किया गया है । मानवीय सौन्दर्य के वर्णन में प्रसाद जी की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे केवल नारी के रूप, भाव, कर्म और शील सौंदर्य से ही आकर्षित नहीं होते अपितु पुरुष के सौंदर्य पर भी मुग्ध होते हैं । अवयव की दृढ़ मांस- पेशियों और ऊर्जस्वित वीर्य वाले मनु भी उनकी दृष्टि में सुन्दर हैं । भाव सौंदर्य को प्रसाद जी ने सबसे अधिक प्रेमभाव के माध्यम से व्यक्त किया है । इसके अतिरिक्त करुण, वात्सल्य, वीर और रौद्र भावों की झांकियाँ भी उनके काव्य साहित्य में मिलती हैं । भाव सौन्दर्य के साथ ही साथ उन्होंने शील और कर्म के सौंदर्य को भी नारी और पुरुष दोनों में आवश्यक ठहराया है । तत्पश्चात प्राकृतिक सौन्दर्य और वस्तुगत सौन्दर्य की भी विस्तार से विवेचना की गई है । अन्त में कलागत सौन्दर्य के अन्तर्गत भाषा, अलंकार, छन्द आदि की सुन्दर छटा को प्रस्तुत किया गया है ।

पंचम् अध्याय प्रसाद काव्य में कल्पना विधान को लेकर प्रस्तुत किया गया है । इस अध्याय में प्रसाद काव्य में निरूपित कल्पना के विविध प्रकारों की चर्चा की

गयी है । क्रिया दृष्टि से कल्पना के मुख्य दो प्रकार माने गये हैं । पहली पुनर्निमायक कल्पना और दूसरी रचनात्मक कल्पना । पुनर्निमायक कल्पना के तीन भेद किए गए हैं - स्मृति निर्भर कल्पना, स्मृत्याभास निर्भर कल्पना और ~~प्रत्यभिज्ञाश्रित~~ प्रत्याभिज्ञाश्रित कल्पना । इसी प्रकार रचनात्मक कल्पना को भी अनेक वर्गों में बांटा गया है जैसे- विभाव विधायक कल्पना, तद्रूप कल्पना, अनुमानाश्रित कल्पना, सृजनात्मक कल्पना और मुक्तयादृच्छिकी कल्पना । व्यापार दृष्टि से कल्पना के तीन वर्ग किए गए हैं - उत्पादक कल्पना, परिवर्तक कल्पना और आच्छादक कल्पना । उत्पादक कल्पना के भी कई भेदों का उल्लेख किया गया है । जैसे- सावयव कल्पना, सादृश्य-निर्भर कल्पना, उदात्त कल्पना, विभावनशील- कल्पना और मानवीकरण -निर्भर कल्पना । अभिव्यक्ति के आधार पर कल्पना के चार भेद किए गए हैं - प्रकृति सम्बंधी कल्पना, प्रेम और सौंदर्य सम्बंधी कल्पना, वायवी कल्पना और कला पक्ष से सम्बंधित कल्पना । अन्त में उनके कल्पना विधान के महत्व का निरूपण किया गया है ।

षष्ठम अध्याय है 'प्रसाद काव्य में बिंब विधान'। इस अध्याय में प्रसाद काव्य में पाये जाने वाले बिंबों के विविध रूपों का विवेचन- विश्लेषण किया गया है । सबसे पहले बिंबों का वर्गीकरण ऐन्द्रिय आधार पर किया गया है। इस आधार पर बिंबों के पांच भेद किए गए हैं - चाक्षुष बिंब, श्रावण बिंब, स्पर्श-शिंब, घ्राण बिंब और रसना बिंबा तत्पश्चात मौलिक बिंब विधान की दृष्टि से बिंबों को विभाजित किया गया है जैसे - शब्द बिंब, वर्ण बिंब, समानुभूतिक बिंब, व्यंजनाप्रवण-सामासिक बिंब और प्रसृत बिंबा अन्य आधारों पर भी बिंब को वर्गीकृत किया गया है। जैसे- संज्ञात्मक बिंब, उदात्त बिंब, संवेदनात्मक बिंब, वस्तुप्रधान बिंब,

घनात्मक बिंब, विस्तार प्रधान बिंब और नाद प्रधान बिंब। निष्कर्ष रूप में उनके काव्य बिंबों के महत्व और उपादेयता पर विचार किया गया है।

सप्तम अध्याय के अन्तर्गत प्रसाद काव्य में निरूपित प्रतीकों के विविध भेदों पर प्रकाश डाला गया है। स्वरूप की दृष्टि से प्रतीक को चार भागों में बांटा गया है - अमूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक, मूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक, अमूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक, मूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक। तत्पश्चात् महत्व की दृष्टि से सार्वभौम प्रतीक, देशगत प्रतीक, परम्परागत प्रतीक, व्यक्तिगत या नवीन प्रतीक, युगीन प्रतीक और भावात्मक प्रतीकों आदि की भी विवेचना की गयी है। प्रयोग की दृष्टि से प्रतीक के दो भेद किए हैं - व्यंजनागर्भी प्रतीक और लाक्षणिक प्रतीक। अन्त में प्रतीयमान के आधार पर भी प्रतीक को वर्गीकृत किया गया है - रूपात्मक प्रतीक, गुण- भाव- स्वभावात्मक प्रतीक, क्रियात्मक प्रतीक और मिश्र प्रतीक। रूपात्मक प्रतीक को तीन वर्गों में बांटा गया है। जैसे- आकृतिमूलक प्रतीक, परिवेशमूलक प्रतीक और वर्णमूलक प्रतीक। निष्कर्षरूप में उनकी सटीक प्रतीक योजना की महत्ता को प्रदर्शित किया गया है।

अष्टम् अध्याय मिथक योजना से सम्बंधित है। इस अध्याय में प्रसाद काव्य में पाये जानेवाले विविध मिथकों जैसे-प्रलय, देवसंस्कृति, देवासुर संग्राम, त्रिपुर संहार जैसे मिथकीय प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात् प्रमुख मिथकीय पात्र जैसे- मनु, श्रद्धा, इड़ा आदि की भी चर्चा की गयी है। तदंतर उर्वशी पुरुरवा की प्रेमकथा और करूणालय की कथा के मिथकीय विधान को प्रस्तुत किया गया है।

नवम् अध्याय उपसंहार का है। इसमें उपलब्धियों और निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हुए यह प्रकाशित किया गया है कि प्रसाद जी का काव्य सौंदर्यशास्त्र की तुला पर एक अत्यन्त सफल, समृद्ध और सम्पन्न काव्य है।

इस शोध-प्रबंध को लिखते समय मैंने जिन विद्वानों की बहुमूल्य कृतियों से लाभ उठाया है - उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० दयाशंकर जी शुक्ल तथा भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० मदनगोपाल जी गुप्त के प्रति आभार प्रकट करना भी मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। आदरणीय डॉ० प्रेमलता बाफना की मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। यह शोध-प्रबंध उनके सुयोग्य निर्देशन का ही फल है। उन्होंने समय- समय पर मेरे मार्ग में आनेवाली कठिनाईयों का निवारण करते हुए मेरा मार्गदर्शन किया है। उनके सहयोग के फलस्वरूप ही आज मैं अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने में समर्थ हो पाई हूँ।

इस शोध- प्रबंध को मैंने यथा साध्य प्रामाणिक तथ्यों और आधारों की भूमिका पर रखकर परिपूर्णता प्रदान करने का प्रयत्न किया है। फिर भी इसमें यत्र- तत्र त्रुटियाँ रह गई हों तो विद्वज्जन इसे मेरे अज्ञान का ही परिणाम मानें। अस्तु।

सर्बजीत हुन्दल

सर्बजीत हुन्दल

--